International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धर्मवीर भारती की साहित्यिक पत्राकारिता

डॉ कुमारी अमिता
षिक्षिका
नार्थ प्वाइन्ट चिल्ड्रेन्स स्कूल, मुजफ्रपफरपुर
बी.आर.ए. बिहार विष्वविद्यालय, मुजफ्रपफरपुर

साहित्य और पत्राकारिता में गहरा संबंध है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। श्री बालकृष्ण राव के षब्दों में ''समसामयिक परिवेष से किसी–न– किसी रूप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्राकार। दोनों ही लेखक हैं, दोनों ही सर्जनाकार हैं, दोनों के कार्य किन्हीं ऐस गुणों की अपेक्षा करते हैं जो दोनों के लिए अपरिहार्य हैं–अनाविल दृष्टि, चिन्तन, लेखन में प्रेष्णीयता की षक्ति दोनें देष और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्पराओं के अतिरिक्त उस संश्लिष्ट परम्परा, उस सामाजिक चेतना–प्रवाह से भी संब(है जिससे उन्हें अपनी बात औरों के प्रति निवेदित करने की प्रेरणा और षक्ति मिलती है। प्रत्येक पत्राकार अंषतः साहित्यकार भी है, प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्राकार भी।

साहित्य और पत्राकारिता के संबंध को लेकर डॉ0 राममोहन पाठक ने कहा है–''साहित्य और पत्राकारिता में कोई बुनियादी अन्तर नहीं है। अन्तर है भी तो केवल षैली का। जिसे हम साहित्य कहते हैं, वह काफी चिंतन–मनन के बाद लिखा जाता है और पत्रकारिता षीघ्रता में लिखा गया साहित्य ही है। जब पत्रा–पत्रिाकाओं का प्रकाषन षुरू हुआ, उनका प्रचार–प्रसार बढ़ा तो पत्रकारों का यह 'साहित्य लोकरूचि का विषय बनने लगा। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से पत्रकारों ने जिस षैली का अन्त हो गया। यह जरूरी नहीं कि हर साहित्यकार पत्राकार भी है, किन्तु हर पत्राकार कुछ हद तक साहित्यकार अवष्य होता है। अभिव्यक्ति की बेषुमार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

षैलियाँ होती हैं। इन षैलियों में कुछ पत्राकारों के लिए अनुकूल होती हैं और कुछ साहित्यकारों के लिए उपयोगी। यह भी आवष्यक नहीं कि जिस षैली में पत्राकार लिखते हैं, उसमें साहित्यकार भी लिखे। समास षैली पर पत्राकार का और व्यास षैली पर साहित्यकार का एकाधिकार होता है। पत्राकार थोड़े में काम की बात कह जाते हैं और साहित्यकार में शब्द विस्तार अध्कि होता है। आज का साहित्यकार जो बात एक हजार षब्दों में कहता है, आज का पत्राकार उसे ही चुस्त भाषा के साढ़े सात सौ या कुछ गिने–चुने षब्दों में ही प्रस्तुत कर सकता है। पत्राकार की षैली शुष्क या नीरस नहीं होती। चूँकि पत्रा–पत्रिाकाएँ आज आदमी के लिए होती हैं, इसलिए पत्राकार को अपनी भाशा सरल और रोचक बनानी पड़ती है। पत्राकार कठिन से कठिन विशयों को भी सरल या सुबोध् बना सकता है। इसलिए जब साहित्य के किसी शुष्क और दुरूह विषय पर भी लिखता है तो वह सरल और सुगम हो जाता है। प्राज्जल, परिष्कृत एवं परिमार्जित षैलियों का ही पत्रकारिता में वर्चस्व होता है। किसी भी समय किसी भी विषय पर बिना किसी पूर्व तैयारी के लिखने की क्षमता पत्राकार में होती है, इसीलिए साहित्यकार की तरह लिखने के क्षेत्रा में उसके लिए मूड का कोई बंध्न नहीं होता लिखने का मूड न हो तो साहित्यकार नहीं लिखता किन्तु पत्राकार मूड के बिना लिख सकता है, लिखना ही पड़ता है। पफर्क सिपर्फ इतना ही है कि मूड के बिना लिखी गयी साहित्यकार की रचना कूड़ा हो सकती है किन्तु पत्राकार की बिना मूड की रचना भी बहुध स्वीकार्य होती है।

समीक्षा से सम्ब(भारती की तीन पुस्तकें हैंः– (1) प्रगतिवाद एक समीक्षा (2) मानव–मूल्य और साहित्य, (3) साहित्य विचार और स्मृति।

'प्रगतिवाद : एक समीक्षा' की विषय–सूची निम्नलिखित है :– रूसी साहित्य में प्रगतिवादी धारा', 'प्राचीन, स्थायी और षाष्वत साहित तथा प्रगतिवादी प्रयोग', 'क्या प्राचीन राष्ट्रीय इतिहास पर लिखा गया साहित्य पलायनवादी है? 'प्रगतिवाद और रोमांटिक प्रेम',

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'राजनीतिक अनुषासन और साहित्य, प्रगतिवादी साहित्य में कलात्मक तत्त्वों का अभाव', क्या व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं? 'धर्म, ईष्वर, वैयक्तिक अध्यात्म–साध्ना और सोवियत साहित्य', 'प्रगतिवादी साहित्य के नाम पर गंदी अषलीलता', 'कलाकार किसी का मानसिक गुलाम नहीं बनेगा', तरूण कलाकारों से ।

मनव–मूल्य और साहित्य की विषय–सूची इस प्रकार हैः– 'मानवीय मूल्यों का विघटन', अन्तरात्मा के ध्वंसावशेष', 'अवरूद्ध सृजनात्मकता : पुंस्त्वहीन नायक और सामाजिक अयर्था', 'एक भव्य अतीत का अनिष्चित भविष्य', 'निर्माणपरक दायित्व और राष्ट्र', 'हाथी दाँद की भारतीय मीनारें', 'नयी मर्यादा का उदय', 'समीक्षा के आयाम', 'सृजन–प्रक्रिया का मानवीय धरातल', 'उपन्यास और आत्मान्वेष्ण', 'नयी कविता और दायित्व की आन्तरिकता'।

भारतीय की तीसरी आलेचना पुस्तक साहित्य विचार औ स्मृति उनके निधन के छः वर्षों के बाद 2003 ई0 में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाषित हुई। वस्तुतः भारती द्वारा लिखे गये और उनकी पूर्व की पुस्तकों में संकलित ये बिंध पुश्पा भारती द्वारा लिखे गये और उनकी पूर्व की पुस्तकें में संकलित ये निबंध पुष्पा भारती द्वारा संकलित–संपादित किये गये इस पुस्तक के चार खण्ड हैं। साहित्यिक निबंधों के खण्ड में निम्नलिखित षीर्शक हैं – सूर के काव्य का मूल्यांकन राष्ट्र जागरण के उद्घोशक : मैथिलीषरण गुप्त भारतीय साहित्य जगत में हिन्दी लेखक आधुनिक हिन्दी साहित्यः एक सर्वेक्षण, रंग कर्म कठोर साध्ना है, एक अद्भुत जन–नाट्य षैली : कारध्योज हिन्दी में हास्य लेखन स्थायी साहित्य और प्रगतिवादी दृश्टिकोण बेचारा प्रगतिवाद भी चल बसा संस्कृत अंगरेजी, जापानी, रामकथा की भी जाय बखानी ग्यारह सपनों का देषः एक नयी भावभूमि।

प्रगतिवाद एक समीक्षा की भूमिका में भारती की ये पंक्तियाँ द्रश्टव्य हैं मानवता को प्यार करनेवाले एक ईमानदार कलाकार के नाते प्रगति मेरा ईमान है, मेरी कलम की जवानी है, लेकिन अपनी आत्मा में मैं जिस सत्य का साक्षात्कार करता हूँ, उसे निर्भीकता से आगे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रखना मेरा कर्त्तव्य है। जहाँ तक कम्युनिश्ट प्रगतिवाद का संबध है, उसके अंदर जो कुछ भी संकीर्णताएँ हैं, जहाँ वह अपने में सिमटा हुआ भारत की सांस्कृति परम्परा से दूर, मानव–जीवन के विषाल कैनवास का रूप धरण कर लेता है, वहाँ एक ईमानदार साहित्यिक के नाते मैं उसके खिलापफ आवाज उठाने के लिए बाध्य हो जाता हूँ। एक सत्य के खोजी साहित्यिक के लिए मानवीय मूल्य का महत्त्व किसी भी मद से ज्यादा है, इसीलिए मुझे वाद का विरोध करना पड़ता है। प्रगति के समर्थन में आवाज उठानी पड़ती है क्योंकि मैं देख रहा हूँ 'वाद' की जंजीरों ने प्रगति के कदम जकड़ लिए हैं।

धर्मवीर भारती की साहित्यिक पत्राकारिता का वैश्ष्ट्य 'निकर्ष' के अंकों में भी देखा जा सकता है। 'निकष' अपने समय का अत्यन्त तेजस्वी पत्र था। निकर्श के प्रकाषन की प्रेरणा की ओर संतेत करते हुए भारती ने स्वयं कहा है ''माँ जरा कट्टर किस्म की आर्य–समाजी थीं। उन्हें यह साहित्यि लेखन और जीवन बहुत पसन्द नहीं था पर मामा ने बहुत प्रोत्साहन दिया। उस समय तक परिमल संस्था कापफी लोकप्रिय हो चुकी थी। मैं उसके प्रारंभिक सदस्यों में था। मतवाद के घेरे में साहित्य को बाँध्ना ठीक नहीं है इस बात को लेकर प्रगतिषील लेखमों में कापफी विवाद रहता था। तभी नवलेखकर के प्रतिनिधि त्रौमासिक के रूप में निकर्ष का प्रकाषन षुरू किया। उसी समय नदी प्यासी थी चाँद और टूटे हुए लोग ठेले पर हिमालय सि(साहित्य का प्रकाषन हुआ। तब मैं विष्वविद्यालय में अध्यापन करने लगा । इस दौरान अस्तित्ववादी तथा पष्चिम के अन्य नये दर्षनों का विषिश्ट अध्ययन किया। रिल्लके की कविताएँ, कामू के लेख अन्य नये दर्षनों का विषिश्ट अध्ययन किया। रिल्के की कविताएँ, कामू के लेख और नाटक, ज्याँ पाल सात्रा की रचनाएँ और काल मार्क्स की दर्षनिक रचनाओं में काफी डूबा और साथ ही महाभारत, गीता, विनोबा और लोहिया के साहित्य का विषेश अध्ययन किया। गाँधी जी को भी नये परिप्रेक्ष्य में समझने की कोषिष की। भारतीय सन्त और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्पफी–काव्य, विषेशतः कबीर, जायसी और सूर को पुनः पढ़ा और समझा। नाथ परम्परा और सि(साहित्य तो रिसर्च के विशय थे ही।

'निकश' के सम्पादक के रूप में धर्मवीर भारती के साथ लक्ष्मीकान्त वर्मा का भी नाम छपता था। 'निकश' वस्तुः नवलेखन को समृद्व करनेवाला पत्रा था। आज के स्थापित अनेक रचनाकार प्रथमतः इसी में प्रकाषित हुए थे। 'निकश' वस्तुतः साहित्य संकलन था किन्तु अपनी प्रखर सम्पादकीय दृश्टि के कारण इसने साहित्यिक पत्राकारिता के क्षेत्रा में युगानतर किया। 'निकश' ने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं को समृ(किया। इसने नगरबोध् को नए काव्य के केन्द्र में सीापित किया और जीवन की अनेक विडम्बनाओं पर गहरी चोट की। 'निकश' का प्रथम अंक अपनी प्रयोगधर्मिता के कारण महत्त्वपूर्ण हुआ, किन्तु इसके दूसरे तथा तीसरे–चौथे अंकों में सामग्री–चयन में संपादक की प्रखर दृश्टि सामने आई। दूसरे तथा तीसरे–चौथे अंकों में सामग्री–चयन में संपादक की प्रखर दृश्टि सामने आई। दूसरे तथा तीसरे एवं चौथे अंकों की विशय–सूची निम्नलिखित है।

धर्मवीर भारती ने साहित्यिक पत्रकारिता को 'ध्र्मयुग' के माध्यम से आगे बढ़ाया। ध्र्मयुग एक समग्र साप्ताहिक पत्रिाका थी। इस पत्रिाका ने ध्र्मवीर भारती के मार्गदर्षन में एक विषिश्ट रूप प्राप्त किया। डॉ0 कृश्ण बिहारी मिश्र के षब्दों में टाइम्स ऑपफ इण्डिया ग्रुप की हिन्दी साप्ताहिक पत्रिाका धर्मयुग सर्वाध्कि लोकप्रिय और सबसे ऊँचे विक्रय–स्तर की साप्ताहिक पत्रिाका थी। इसका प्रकाषन 1950 में बम्बई से हुआ था कथाषिल्पी इलाचंद्र जोषी इसके संपादक बने मगर जोषी बन्ध्ुओं के संपादन में धर्मयुग वह ऊँचाई नहीं उपलब्ध् कर सका, जिस साध से उसका प्रकाषन हुआ था और जो डॉ0 ध्र्मवीर भारती के सम्पादन ने उसे उपलब्ध् करायी। भारती के सम्पादन में ही ध्र्मयुग स्वाधीन भारत का सर्वाध्कि लोकप्रिय साप्ताहिक पत्रा बना।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जनवरी सन् 1960 में डॉ0 धर्मवीर भारती का धर्मयुग के सम्पादकीय विभाग में प्रवेष हुआ, प्रधन–संपादक के रूप में। 13 मार्च 60 यानि होली अंक में छोटी किन्तु महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय घोशणा प्रकाषित हुई थी। इसी अंक से सही अर्थ में भारती ी परिकल्पना के अनुसार 'धर्मयुग' का प्रकाषन षुरू होता है। भारती ने हिन्दी–पाठक के संबंध में चलती आ रही उस धारणा का प्रतिवाद किया कि हिन्दी पाठक खरीदकर पत्र–पत्रिका नहीं पढ़ता और यह कि वह सस्ती कुरूचिपूर्ण सामग्री की तलाष में रहता है।

सन्दर्भ :–

1. मध्यम प्रवेषांक, सम्पादकीय (सन् 1964 ई0)
2. साहित्यिक पत्रकारिता (काषी की पत्राकारिता का विषिश्ट संदर्भ) डॉ0 राममोहन पाठक, पृश्ठ : 2
3. धर्मवीर भारती की साहित्य–साधना, पृ0 : 644 – 645
4. टालोचना, अंक –16 (दायित्व और स्वातंत्राय अविच्छन्न मूल्य, संपादकीय से)
5. धर्मवीर भारती की साहित्य–साधना, कृश्ण बिहार मिश्र, पृ0 : 648
6. धर्मवीर भारती से साक्षात्कार, पृ0 : 11–12
7. निकश, अंक : 1 (संपादकीय)
8. उपरिवत्
9. धर्मवीर भारती की साहित्य–साधना, पृ0 : 649–650
10. निकश, अंक : 3–4 (संपादकीय)
11. धर्मवीर भारती की साहित्य–साध्ना, कृश्ण बिहारी मिश्र, पृ0 : 651